मोरंगे

नवम्बर–दिसम्बर 2018

इस बार

खिड़की

3 दौड़

कवितायें

8 चींटी / राष्ट्रगान

जंतर–मंतर

10 बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ

कहानियाँ

11 जलेबी

12 हेमू

13 जिसे भी भूख लगे आ जाओ

15 साथ रहेंगे

16 प्यासा पेड़

याद की धूप–छाँव में

17 किसान की चोट

बात लै चीत लै

18 घर की हालत

19 **मटरगश्ती बड़ी सस्ती**

हीहीही–ठीठीठी

20 **कुछ हमने बढ़ायी,**

कुछ तुम बढ़ाओ

अंकिता, उम्र–11 वर्ष, समूह–रौशनी

सम्पादन : विष्णु गोपाल

सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक

डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज

प्रूफ़ : जगदीश प्रसाद सैनी

वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल

आवरण पर चित्र – पूजा मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–रंगोली

वर्ष 9 अंक 101–102

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन

विजेन्द्र पाल

सचिव,

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर

(राजस्थान) 322001

फोन : 07462–220957

फेक्स : 07462–220460

दौड़

तरूण एक साधारण विद्यार्थी था। उसके माता–पिता उसके परीक्षा परिणामों से कभी खुश नहीं होते थे। वह गाने, नाचने, अभिनय करने और चित्र बनाने में भी अच्छा नहीं था। वह हमेशा सोचा करता कि वह अपने परिवार में किसी काम का नहीं है। उसका बड़ा भाई एक अच्छे कॉलेज से इन्जीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। परिवार उस पर गर्व करता था। लेकिन तरूण ऐसी किसी चीज में अच्छा नहीं था।

आशा सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–खुशबू

हालांकि उसमें एक बड़े ऐथलीट की क्षमता भरी हुई थी। वह एक बहुत अच्छा धावक था। दिन हो या रात वह घंटों दौड़ सकता था। जब कभी वह उदास और अकेलापन महसूस करता, वह दौड़कर खुद को शांत करता और अपने मन में छुपी भावनाओं को बाहर निकालता। जब उसकी स्कूल बस छूट जाती तो दौड़कर स्कूल जाता। उसका स्कूल घर से 8 किलोमीटर दूर था। उसका एक सपना था कि वह दुनिया का सबसे तेज धावक बनना चाहता था। तरूण नहीं जानता था कि इस सपने को कैसे पूरा किया जाये। एक तरफ उसके माता–पिता दौड़ से नफरत करते थे और चाहते थे कि वह अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान दे जो उससे कभी नहीं

हुआ। दूसरी तरफ वह मध्यम वर्गीय परिवार से था और तरूण जानता था कि अपना सपना पूरा करने के लिये, उसे जबरदस्त प्रशिक्षण की जरूरत थी। जिसकी फीस उसके परिवार की क्षमता से बहुत ज्यादा थी।

जब तरूण वार्षिक परीक्षा में फेल हो जाता, उसके पापा उससे बहुत गुस्सा होते। उसके दोस्त उसका मजाक उड़ाते। एक दिन उसने खुद को मिटाने की सोची और दौड़ने लगा। वह पार्क के चारों तरफ दौड़ा। सूरज उसके गुस्से को हराने के लिए सर पर चढ़ आया, लेकिन तरूण बिलकुल नहीं रूका। लगभग एक घंटे बाद वह पूरी तरह से थक गया था। जब उसका गुस्सा कम हो गया तो वह एक बैंच पर लेट गया और हांफने लगा।

अचानक उसने एक आवाज सुनी। ''बेटा ये सब क्या है?''

तरूण ने अपने बांई तरफ देखा और वहाँ एक आदमी बैठा था। जिसकी उम्र लगभग 60 वर्ष थी।'' मैं दो विषयों में फेल हो गया हूँ।'' तरूण ने दुःखभरी आवाज में कहा।

आदमी सहानुभूती के साथ मुस्कुराया और कहा, ''बेटा, जिन्दगी उतार–चंढ़ाओं से भरी है। वैसे, मैं रामनारायण हूँ और जितना मैंने देखा है तुम बेहतरीन धावकों में से एक हो।''

''रामनारायण? रा....म....नारायण! क्या आप वही रामनाराण हैं जिन्होनें 1960 के ओलम्पिक में 400 मीटर दौड़ में पदक जीता था?'' तरूण अपनी खुशी को छुपा नहीं सका।

''हाँ'' प्यारा सा जवाब मिला। तरूण हैरत में था।

''बेटा, मैं तुम्हें पिछले 45 मिनट से देख रहा हूँ,'' रामनारायण कहते रहे, ''और, मैं तुम्हारे अन्दर अच्छा भविष्य देख रहा हूँ।'' तरूण ने कुछ नहीं कहा, लेकिन शरमा गया।

''तुमको अपने अंदर उत्साह का दीपक जलाए रखना है और कभी हार नहीं माननी है। तुम्हे अच्छे ट्रेनिंग स्कूल में जाना चाहिए।''

तरूण की मुस्कुराहट परेशानी में बदल गई। ''ट्रेनिंग स्कूल बहुत खर्चीले हैं, सर, और मैं बेरोजगार हूँ।'' तरूण ने प्रसन्नता से कहा, हालांकि इन परिस्थितियों में वह भी मजाक कर सकता था।

लेकिन रामनारायण बहुत गम्भीर थे, ''अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हे ट्रेंड कर सकता हूँ, लेकिन मेरी एक शर्त है।''

''क्या शर्त है?'' तरूण की आवाज में उत्सुकता दिख रही थी।

''बाल दिवस पर नेहरू स्टेड़ियम में एक दौड़ है। तुम्हारी उम्र के बच्चे उसमें

भाग लेंगे। यदि तुम ये दौड़ जीतते हो, तो मैं तुम्हारी ट्रेनिंग शुरू कर दूंगा।'' रामनारायण ने कहा।

'यह बड़ी शर्त नहीं थी,' तरूण ने सोचा। ''मैं करूंगा, मैं करूंगा सर!'' उसने खुद को पूरे आत्मविश्वास के साथ यह कहते हुए सुना।

''ठीक है, बेटा! तुम्हे रेस में भाग दिलाना मेरा काम है और याद रखना, तुम्हे इसे जीतना है। मुझे बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?'' रामनारायण ने पूछा।

''तरूण... तरूण कपूर, सर।''

''तरूण मैं तुम्हारा प्रतियोगिता कार्ड देने के लिए तुमसे पॉच दिन बाद मिलूंगा। रामनारायण ने शुभकामनाएँ दी और चले गये।

अगला दिन उम्मीद की एक नई किरण लेकर आया। तरूण जल्दी उठा, इससे पहले कि उसकी मॉ उससे जल्दी उठने का कारण पूछती, उसने दूध लिया और दौड़ते हुए बाहर निकल गया। दौड़ की विस्तृत जानकारी लेने के लिए वह नेहरू स्टेड़ियम पहुँचा। सच में वह बहुत खुश था।

तरूण ने उत्साह के साथ तैयारी शुरू कर दी। रोजाना वह सुबह चार बजे उठता और 16 किलोमीटर दौड़ता। शाम को वह प्रतियोगिता के लिए 1000 मीटर दौड़ की तैयारी करता। वह चाहता था कि हर चीज सही हो। वह यह भी चाहता था कि कोई उसे समय पर जगा दे। इस लिए वह अपनी माँ को हर बात बताता। तरूण ने पाँच दिनों तक पूरी ताकत के साथ तैयारी की और प्रतियोगिता कार्ड के लिए

दीपिका मीना,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–खुशबू

रामनारायण से मिला। तरूण ने कागज के टुकड़े को ध्यान से देखा, जो उसके लिए बहुत मायने रखता था। मुद्दा यह नही था कि उसे दौड़ जीतनी थी। वह अपने पापा को दिखाना चाहता था कि वह परिवार के लिए निकम्मा नहीं है। कम से कम वह भी कुछ चीजों में अच्छा हो सकता है।

14 नवंबर आ गया। माँ से बात करने के बाद उसने आशीर्वाद लिया और स्टेडियम के लिए पैदल ही चला गया। वहाँ बहुत सारी भीड़ अन्दर जाने का इन्तजार कर रही थी। तरूण ऑफिस में गया। उसने प्रतियोगिता में भाग लेने वालों की सूचना धडकते दिल के साथ पढ़ी। उसका दिल हर सैकण्ड तेजी से धड़कता जा रहा था। लगभग 50 प्रतियोगी अन्दर थे जो दौड़ शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे।

किसी ने उसके कंधे थप–थपाए।

''हैलो, तरूण!'' ये रामनारायण थे। ''शुभकामनाएँ'' उन्होने प्यार से कहा। तरूण उनकी तरफ देखकर मुस्कराया लेकिन एक शब्द भी नहीं बोला। सभी प्रतियोगी लाईन पर आ गये, प्रत्येक दौड़ जीतने की आशा कर रहा था। उनमें से प्रत्येक का परिवार और दोस्त उनको प्रोत्साहित करने के लिए दर्शक दीर्घा में थे। अपनी माँ को दर्शक दीर्घा में देखा तो तरूण को आश्चर्य हुआ। उसकी ऑखों में जो डर था वह आत्मविश्वास में बदल गया।

सीटी बजते ही सभी प्रतियोगी अपनी पूरी ताकत से दौड़े। वे सभी दौड़ जीतने के लिए दृढ़ निश्चयी थे। तरूण बढ़त बनाने में उन सब में सबसे आगे था। तरूण ने खुद को सबसे आगे देखकर खुद पर बहुत गर्व महसूस किया।

दौड़ के रास्ते पर एक गंदे पानी का रास्ता भी था। जब वह तेज दौड़ रहा था, तरूण ने उसे नहीं देखा और वह फिसल गया। जोरों की साँस चल रही थी, उसने देखा अन्य बच्चे उसे पीछ छोड़कर जा रहे हैं। आज वह हार नहीं सकता। इसलिए एक सैकण्ड गवाये बिना, वह फिर से दौड़ने के लिए उठा। जल्द ही तरूण कुछ बच्चों से आगे निकल गया जो उससे आगे थे। बदकिस्मती से वह एक बार फिर फिसल गया। यह उसके साथ क्या हो रहा था? इसे वह सह नही सका। उसने भीड़ की तरफ देखा और अपनी माँ को देखा। वह उससे कुछ कह रही थी, ''उठो, बेटा, उठो और दौड़ो।''

इसलिए तरूण एक बार फिर उठा। वह अन्तिम कुछ बच्चों में था। लेकिन उसने हार नही मानी। एक बार फिर उसने कुछ बच्चों को पीछे छोड़ दिया। वह तीसरी बार गिरा, तब वह थोड़ा ज्यादा दुःखी था। उसके गालों पर ऑसू बह रहे थे। अब वह कैसे रामनारायण से ट्रेनिंग लेगा? वह अपने माता–पिता को कैसे साबित करेगा

कि वह प्रतिभावान है? अब ट्रेक पर वह अन्तिम बच्चा था। उसने अपनी ऑखें दर्शक दीर्घा की तरफ घुमाई। तभी उसने कहीं से रामनारायण के चिल्लाने की आवाज सुनी, ''कम ऑन, तरूण, दौड़ो!'' और इस प्रकार वह तीसरी बार उठा। यह 12 वर्ष का जूझारू लड़का था, जो ट्रेक पर सबसे पीछे था, उठा और अपनी पूरी ताकत से दौड़ा, जितनी उसमें थी।

भीड़ पवन को बधाई दे रही थी, जिसने दौड़ जीती। लेकिन तरूण को आश्चर्य

कमल कुमार सैनी, शिक्षक

हुआ, अन्त में जब उसने दौड़ पूरी की तो बहुत तेज तालियों से उसका स्वागत किया गया। दृढ़ता और कभी हार नहीं मानने के मूल्य पर दर्शक उसे बधाई दे रहे थे।

उसने अपना सर शर्म से झुकाते हुए रामनारायण से कहा, ''मैं माफी चाहता हूँ सर, मैं हार गया।''

''नहीं बेटा, मेरे लिए तुमने अपनी जिंदगी की सबसे मुश्किल दौड़ जीती है। हर समय जब भी तुम गिरो, उठो और फिर से नई शुरूआत करो। तुम जीवन के असली हीरो हो। तुम्हारी ट्रेनिंग कल से शुरू होगी।''

तरूण को फिर से अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह मुस्कुराया जब उसकी माँ ने उसे गले लगाया और कहा, ''तुम दुनिया में सबसे अच्छे बेटे हो!''

स्रोत–निषा पंजाबी (NBT Book), **अनुवाद– विष्णु गोपाल**

कविताएँ

चींटी

चिंटू के हाथ से गिरी मिठाई।
छोटी सी चींटी देख मिठाई।
जाकर घर से वापस आई।
संग में अपने कुनबा लाई।
लगी खींचने सारी मिलकर।
रोने लगा चिंटू भाई।
सुनकर उसकी मम्मी आई।
फूंक मारकर चींटी भगाई।
चिंटू के मुख पर रौनक आई।

ममता साहू, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला,
जगनपुरा

रौनक,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–संगम

किरण बाई जगा, गाँव–पाड़ली

राष्ट्र गान

देश हमारा सबसे प्यारा।
कहते हिन्दूस्तान हैं।
आओ बच्चों जोर से बोलो।
इसका भी एक गान है।
एक साथ सब मिलकर गाते।
ये तो राष्ट्र गान है।
मेरा देश महान है।
प्यारा हिन्दुस्तान है।

सीमा, ज्योति, गरिमा,
समूह–तिरंगा

गन्दोड़ी, गाँव–पाड़ली

जंतर–मंतर

लाल टमाटर खाऊँगा।
माधोपुर जाऊँगा।
माधोपुर में आया शेर।
उसने खाया कड़वा बेर।
बेर में निकला जहर।
खाते ही बेर अचेत हुआ शेर।
भागा–भागा गया जंगल।
साधु दिखा रहा था जादू।
साधू ने मारा मंतर।
षेर ने पहना जंतर।
जहर हुआ छू मंतर।
शेर हुआ रफूचक्कर।

सुखराम मीना,
उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा

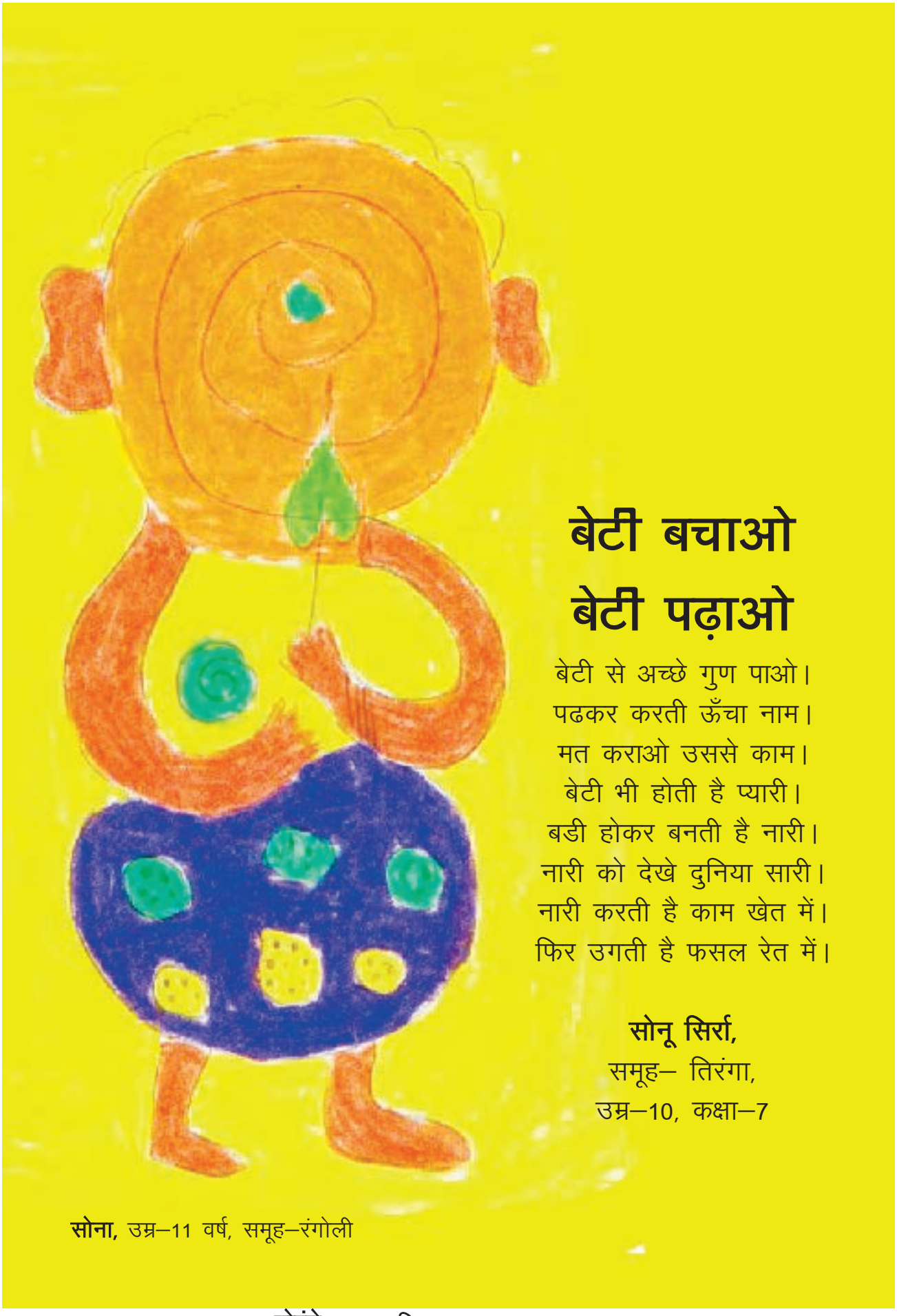

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

बेटी से अच्छे गुण पाओ।
पढकर करती ऊँचा नाम।
मत कराओ उससे काम।
बेटी भी होती है प्यारी।
बडी होकर बनती है नारी।
नारी को देखे दुनिया सारी।
नारी करती है काम खेत में।
फिर उगती है फसल रेत में।

सोनू सिर्रा,
समूह– तिरंगा,
उम्र–10, कक्षा–7

सोना, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

कहानी

जलेबी

बुद्धि प्रकाश, उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

एक गाँव था। उस गाँव मे दो बच्चे रहते थें। एक का नाम रामू और दूसरे बच्चे का नाम श्यामू था। वे दोनों बाजार जा रहे थे। उनकी माँ ने उन्हें घर का सामान लाने के लिए बाजार भेजा था। वे दोनो बच्चे दुकान पर पहुँच जाते हैं। दुकान से सामान ले लेते है और घर की ओर निकल पडते है। उन दोनों बच्चो को रास्ते मे दस रूपये दिखाई देते हैं। रामू और श्याम दस रूपये पर टूट पडते हैं। रामू कहता है ''पहले मैंने इसे देखा इसलिए इसे मैं ही लूँगा।'' श्यामू कहता है कि ''नही, पहले मैने देखा था, इसे मैं लूँगा।'' रामू और श्यामू दोनो झगड़ने लग जाते हैं। वे मार–पीट करने लग जाते हैं। उस रास्ते से एक बूढ़ा व्यक्ति गुजरता है। वह बूढ़ा व्यक्ति उन्हें लड़ने से मना करता है। लेकिन वे उस बूढ़े व्यक्ति की बात नहीं मानते और झगड़ते रहते हैं। उस बूढ़े व्यक्ति को गुस्सा आ जाता है। वह व्यक्ति दोनों के एक–दो डंडो की मार देता है। वे दोनो बच्चे रूक जाते हैं। बूढ़ा व्यक्ति पूछता है, ''तुम क्यो लड़ रहे हो?'' वे बच्चे अपनी समस्या बता देते हैं। वह बूढ़ा व्यक्ति उपाय सोचने लग जाता है और उसे उपाय मिल जाता है। वह व्यक्ति कहता है तुम दोनों मेरे पीछे–पीछे चलो। वह व्यक्ति उन्हें एक मिठाई की दुकान पर ले जाता है और दुक. ानदार से कहता है, ''भाई दस रूपये की जलेबी दे दो।'' वह मिठाई लेकर उन दोनों को दे देता है और कहता है ''इसे मिल कर खा लेना।'' वह बूढ़ा व्यक्ति वहाँ से चल देता है। वे दोनों बच्चे मिलकर जलेबी खा लेते हं फिर रामू श्यामू से कहता है अगर वह बूढ़ा व्यक्ति हमें लड़ने से नही रोकता तो आज हमारी दोस्ती खत्म हो जाती। अब दोनों घर की ओर चल देते हैं।

शिवानी महावर, कक्षा –8, उम्र–13 वर्ष

हेमू

एक बार एक लड़की थी। उसका नाम हेमू था। वह बहुत भोली थी। उसके माता–पिता और भाई उसको पसंद नहीं करते थे। इसलिए घर का सारा काम हेमू ही करती थी। एक दिन वह पानी भरने गई तो उसके मन मे ख्याल आया कि पापा–मम्मी तो भईया को प्यार करते है। मुझे तो कोई भी प्यार नही करता। क्योंकि पापा भैय्या के लिए ही सब कुछ लाते है। मेरे लिए तो कुछ भी नहीं लाते। जब वह घर गई तो उसने उसने मम्मी से कहा, ''मुझे बहुत भूख लगी है। मुझे खाना दे दो।'' उसकी मम्मी ने मना कर दिया। यह सुनकर हेमू बहुत उदास हो गई और कमरे मे जाकर सो गई। जब रात का खाना बना तो उसकी मम्मी ने उसको खाना खाने के लिए बुलाया। हेमू बहुत खुश हो गई कि पहली बार मम्मी ने खाने के लिए बुलाया है। जब वह खाना खाने गई तब उसने देखा उसके भाई की प्लेट मे बहुत अच्छे–अच्छे पकवान परोसे हैं, लेकिन हेमू की थाली में सब्जी रोटी ही परोसी है। इसके बाद हेमू अपने कमरे में जाकर रोने लगी। रोने की आवाज सुनकर उसकी माँ कमरे में आ गई और उसे रोता देखकर वह बहुत दु'खी हुई। माँ उसको प्यार करने लगी। मम्मी उसके पापा से जाकर कहने लगी की हेमू को आज से सब प्यार करेगे और उसे कोई भी तंग नहीं करेगा। भय्या ने जाकर उसको टॉफी खिलाई और उससे सोरी कहा।

फोरन्ती, उम्र–11 वर्ष, समूह–हरियाली

नन्दिनी महावर, कक्षा–6, उम्र–12 वर्ष

जिसे भी भूख लगे आ जाओ

एक बार एक कुत्ता था वह अकेला रहता था। उसे कोई भी खाने को नहीं देता था इसलिए कुत्ता रोजना भूखा ही रह जाता। गाँव के सारे पालतु कुत्ते उसे चिढ़ाते थे। उस गाँव मे एक बहुत अमीर आदमी था। उसे कुत्ते अच्छे नही लगते वह कुत्तों को मारता था। एक दिन कुत्ते ने सोचा अगर यह आदमी मुझे अपना ले तो मे कभी भूखा नही रहूँगा। एक दिन वह आदमी घर से बाहर गया तो उसे बहुत सारे कुत्ते मिले और वे कुत्ते उस आदमी कें पीछे भागे। तभी गरीब कुत्ता वहाँ आया और सभी कुतो को नीचे गिरा दिया। वह आदमी बहुत खुश हुआ और उसे अपना लिया। फिर वह कुत्ता कभी भूखा नही रहा। एक दिन उस कुत्ते को बुखार आया और मालिक भी वहाँ नही था। कुछ देर बाद मालिक आया और उसने देखा कि कुत्ता बहुत गंभीर हालत मे पड़ा हुआ था। मालिक कुत्ते को अस्पताल ले गया और कुत्ता सही हो गया। मालिक खुश हुआ और उसके खुशी के आँसू भी निकले। फिर मालिक ने कुत्ते की आँखो पर पटटी बाँधी और ले गया। आगे जाकर कुत्ते की आँखो से पटटी हटाई तो देखा की मालिक ने कुत्ते के लिए नया हार खरीदां था। मालिक ने कुत्ते का नाम शेरू रख दिया। कुत्ता बहुत खुश हुआ। शेरू को खुद का कमरा खिडकी टेबल सब दिया। वह कुत्ता और खुश हुआ। एक दिन मालिक गुजर गया तो कुता बहुत उदास हुआ। वह सारे दिन रोता रहता था और खाना भी नही खाता। एक दिन उसे बाहर गंभीर हालत मे एक कुत्ता दिखा। उस कुत्ते को शेरू अपने धर ले आया और दोनों दोस्त बन गये। वह कुत्ता अब नही रोता था। फिर शेरू ने

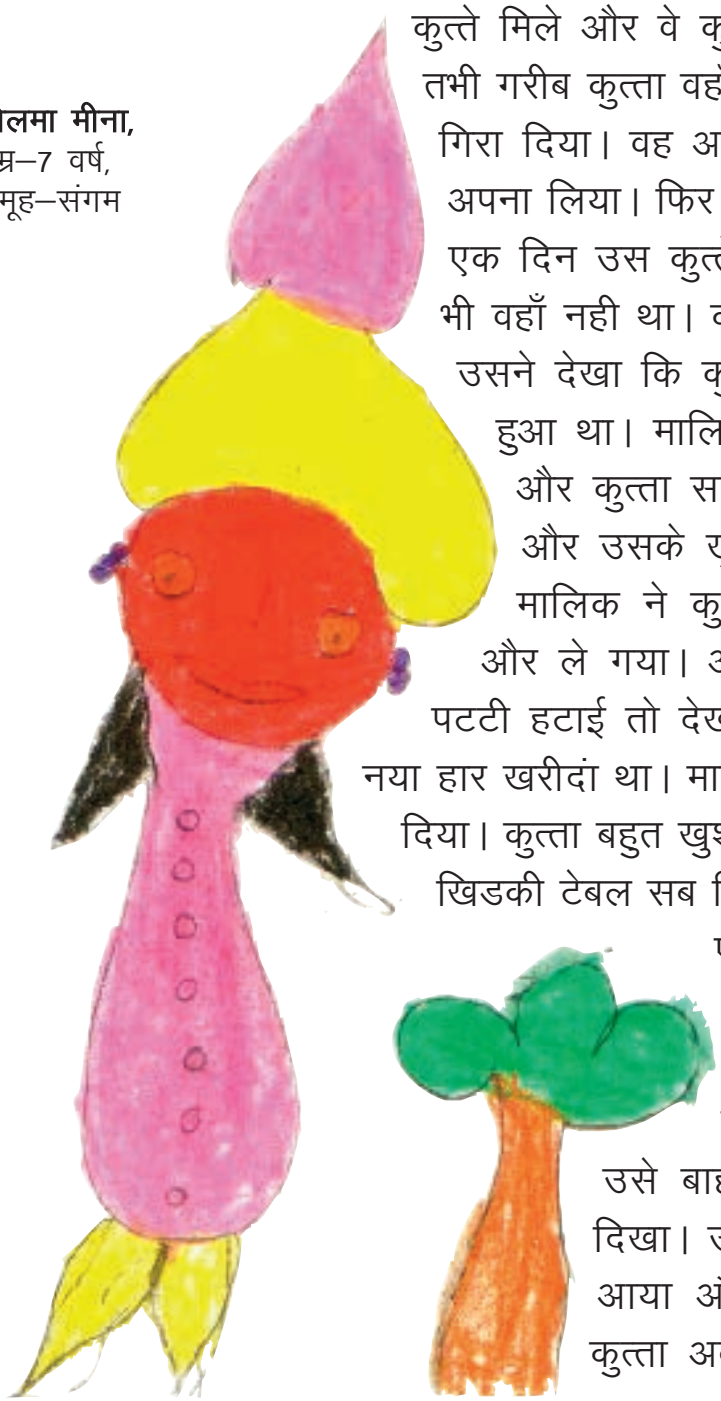

गोलमा मीना,
उम्र–7 वर्ष,
समूह–संगम

उसके दोस्त का नाम टोमी रख दिया। एक दिन टोमी बाहर बैठा था। तो उसे एक चूहा दिखाई दिया। चूहा बहुत भुखा था। टोमी उसके पास गया तो चूहा टोमी से डर के भाग गया। चूहे को आगे बिल्ली मिली जैसे ही बिल्ली चूहे को खाने लगी टोमी ने बिल्ली को भगा दिया। चूहा खुश हुआ और उसके साथ चल दिया। टोमी ने शेरू से चुहे को मिलाया शेरू भी खुश हुआ और तीनो दोस्त आराम से रहने

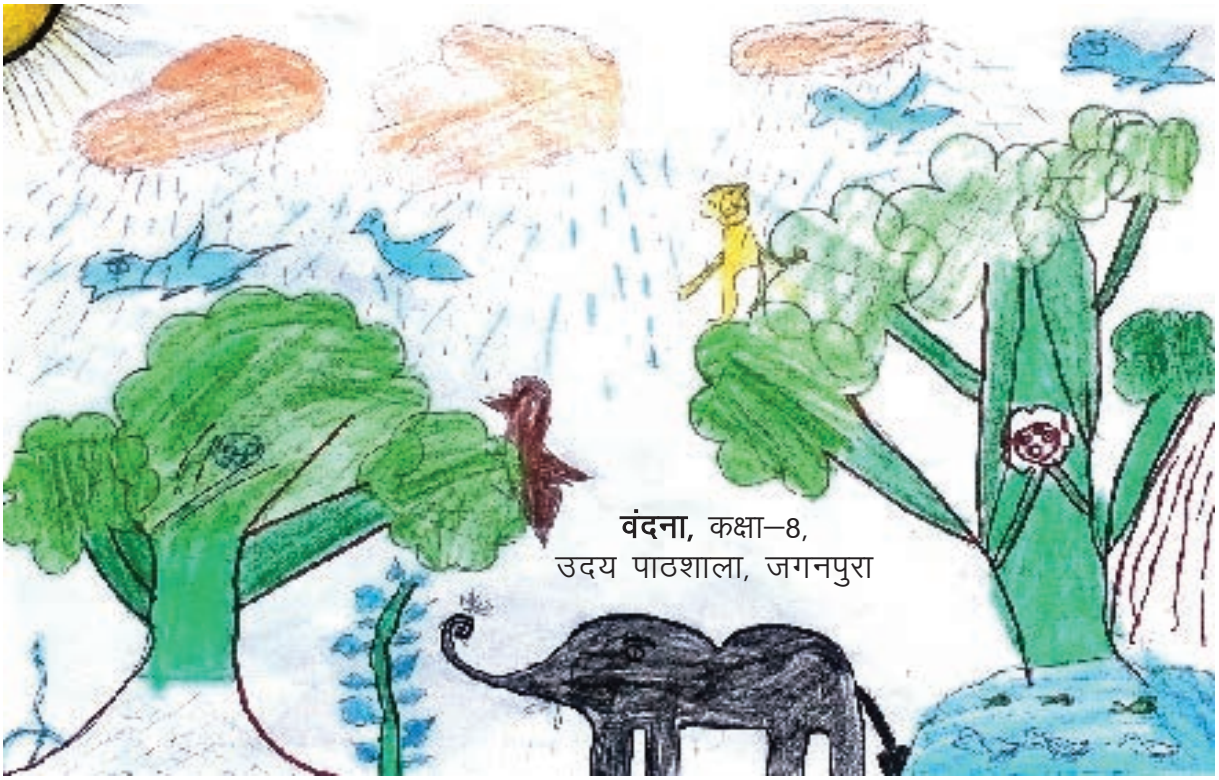

वंदना, कक्षा–8,
उदय पाठशाला, जगनपुरा

लगे। एक दिन शेरू को सपना आया की उसका मालिक उसे बुला रहा है। कुत्ता खुश होकर भागा तो धडाम से नीचे गिर गया और बेहोश हो गया। टोमी और चूहा वहाँ आये और शेरू के ऊपर पानी डाला। शेरू कुछ देर बाद उठ गया और उसे मालिक की याद आने लगी। शेरू रोता रहा टोमी और चूहा शेरू को एक नयी जगह ले गए। शेरू खुश हुआ और वहां तीनो खेलने लगे। वे घर चले गए और उन्होंने घर में अपने मालिक की तस्वीर लगाई और घर के आगे मालिक का नाम लिखा और लिखा जिसे भी भूख लगे घर के अन्दर आ जाओ। एक दिन वहाँ एक शेर आया तो टोमी, शेरू और चूहा डरकर टेबल के नीचे छिप गये। शेर बोला मुझे माँस खाना है। फिर शेरू कहता है आप तो जंगल के राजा हो और जानवर आपकी प्रजा। राजा प्रजा को नही खाता है। आप एक बार रोटी तो खाओ आपको मजा आ जाएगा। शेर ने रोटी खाई तो उसे अच्छी लगी। षेर ने जानवर खाना बन्द कर दिया। वह भी उनका दोस्त बन गया और शेर का नाम महाराजा रख दिया।

सोनू सिर्रा, समूह–तिरंगा उम्र –10 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

साथ रहेंगे

एक बार एक आदमी था। उसके एक लड़की थी। उस लड़की का नाम तनू था। तनू अपने माता–पिता की देखभाल में बहुत ध्यान देती थी। एक दिन उसके पिता को बुखार आ गया था। उसके पिता ने तनू से कहा, ''बेटी आज मैं बगीचे में पानी देने नहीं जा सकता, क्योंकि मुझे बुखार आ गया है, आज बगीचे में पानी देने के लिए तुम चली जाओ।'' वह बगीचे में जा पहुँची। उसने वहाँ एक नेवला देखा वह नेवला पेड़ पर चढ़ रहा था। उसने उसे देखा तो उसका मन विचलित हो गया। उसने सोचा कि मैं इसे पकड़कर दूर ले जाती हूँ। वह उसे पकड़ने के लिए गई तो

अमन, कक्षा–6, समूह–रिमझिम

नेवला पेड़ की आगे की डाली पर चढ गया। तनू ने पेड़ पर चढकर उसे हाथ में पकड़ लिया और उसे अपने घर ले गई। घर जाकर उसे एक टोकरी में डाल दिया। नेवला टोकरी को काटकर वहाँ से निकल गया। तनू उसके लिए जब खाना लेकर आई तो नेवला उसे टोकरी में नहीं मिला। वह बहुत दुःखी हुई। दो साल बाद तनू की शादी हो गई। उसके लड़के का नाम मोहन था। मोहन बहुत चतुर लड़का था। एक बार वह घूमने के लिए जंगल में गया तो उसे एक शेर दिखाई दिया। उसने उस शेर पर प्रहार किया और शेर को मार डाला। जब वह घर गया तो उसकी माँ बहुत नाराज हुई। उसने कहा कि, ''माँ आप इतनी नाराज क्यों हो?'' उसकी माँ ने कहा, ''एक तो तुम बिना बताये चले गये ऊपर से तुमने षेर को मारा है।'' लड़के ने कहा, ''आज के बाद बिना बतायें कहीं नहीं जाऊंगा और किसी जानवर को भी नहीं मारूंगा। हम सब हमेशा साथ–साथ रहेंगे।''

सुमन सैनी, समूह–उजाला, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

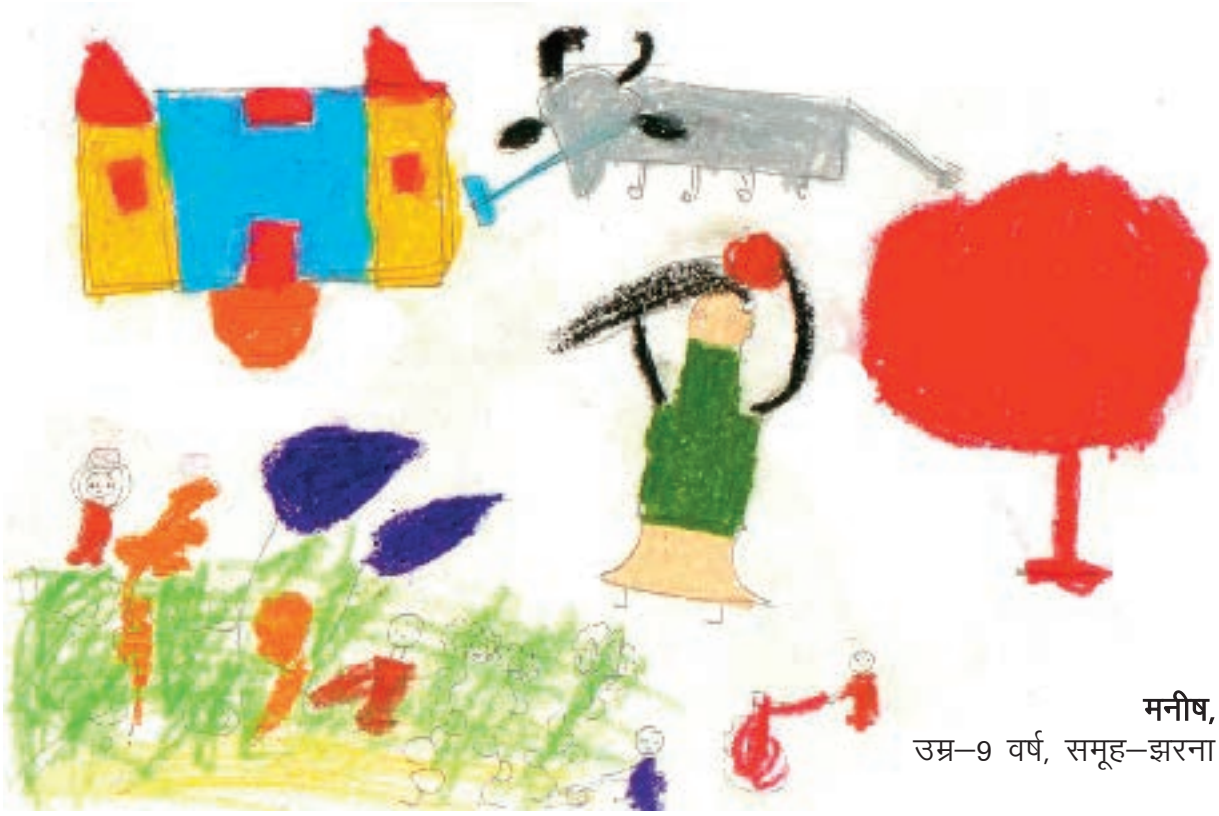

मनीष,
उम्र–9 वर्ष, समूह–झरना

प्यासा पेड़

एक बार एक बुढ़िया थी। वह उसके गाँव जा रही थी। रास्ते में एक जंगल था। जंगल के बीच रास्ते में उसे एक पेड़ मिला। पेड़ बुढ़िया से बोला, ''बुढ़िया बहन, मैंने कई दिनों से पानी नहीं पिया है। इसलिए मैं बहुत सूख गया हूँ।'' बुढ़िया एक नदी के पास गई। उसमें से एक मटकी पानी लाई और उस पेड़ को पिला दिया। पेड़ हरा–भरा हो गया। पेड़ ने उसे धन्यवाद दिया। बुढ़िया आगे बढ़ गई। वह उसके गाँव पहुँच गई। कई दिनों बाद वह बुढ़िया वापस उसी रास्ते से गुजरी तब तक उस पेड़ पर आम आने लग गये थे। बुढ़िया उस पेड़ के पास गई तो पेड़ ने उसे बहुत सारे आम दिये। फिर वह बुढ़िया आमों को लेकर घर चली गई और उसने वे फल खाये।

तभी एक बंदरिया आई और बोली, ''तुम ये आम कहाँ से लाई हो?''

बुढ़िया बोली, ''जंगल से।''

बंदरिया जंगल में गई और आम के पेड़ पर चढ गई। आम के पेड़ को यह बात बुरी लगी। आम के पेड़ ने उसे पीटकर भगा दिया और बोला, ''पहले जब मैंने पानी मांगा था तब पानी तो लेकर नहीं आई और अब आम खाने आई हो।''

दीपक मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा

किसान की चोट

एक बार एक किसान था। वह फसल बेचकर आ रहा था। उसे रास्ते में एक हाथी मिला। हाथी बोला, ''किसान भाई मुझे बचा लो, मेरे पीछे एक अजीब सा जानवर पड़ा है।''

किसान ने हाथी से कहा, ''तुम मेरे साथ मेरे घर पर चलो, वहाँ कोई नहीं आ पायेगा।''

हाथी ने कहा, ''मैं गाँव में नहीं जा सकता, मैं जंगल में ही रहूंगा।''

फिर हाथी चिल्लाया कि वो अजीब सा जानवर आ रहा है। वे दोनों तेजी से भागे। भागते–भागते वे दोनों चलती बस में चढ़ गये। वे दोनों अब गाँव की तरफ जा रहे थे। परन्तु रास्ते में अचानक बड़ा गड्डा आ जाने के कारण बस में जोर दचका लगा। जिससे वह किसान बस से नीचे गिर गया। किसान को गिरता देख हाथी भी जल्दी से बस से नीचे उतर गया। हाथी किसान को उठाकर अस्पताल लेकर कर गया। वहाँ किसान का ईलाज कर दिया। परन्तु हाथी को अस्पताल के अन्दर नहीं घुसने दिया।

किसान ठीक होने के बाद अस्पताल से सीधे घर चला गया।

किसान की पत्नी ने पूछा, ''आपको यह चोट कैसे लगी?''

किसान बोला, ''कुछ नहीं ऐसे ही लग गई।''

किसान की पत्नी ने पूछा, ''एक्सीडेंट हुआ था क्या?''

किसान बात छुपाते हुए बोला, ''कुछ नहीं हुआ।''

पीछे से हाथी उस किसान की दवाईयाँ लेकर आ रहा था। किसान की पत्नी हाथी को अपनी तरफ आता देख डर गई। हाथी ने पास आकर किसान की पत्नी को दवाइयाँ दी और पूरी बात बताई।

किसान की पत्नी ने किसान से कहा, ''आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? तुम फसल बेचकर जो पैसे लाये थे क्या वो सारे ही इन दवाइयों में खर्च कर दिये हैं?''

किसान ने कहा,''नहीं केवल 250 रूपये की दवाइयाँ आई है। यह लो 5000 रूपये तुम रख लो।''

किसान ने आगे कहा, ''राखी का त्योहार आ रहा है। तुम ऐसा करो, ये पैसे लेकर हाथी के साथ चले जाओ और कपड़े वगैरह खरीद लाओ।''

अन्तिमा, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

घर की हालत

एक छोटे से गाँव मे एक बुढ़िया और उसका बेटा–बहू रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उसका बेटा इतना ही कमा पाता था कि जिससे घर का गुजारा ही चलता था। उसकी बहू पानी लेने जाती थी। वह मटकी सिर पर रख नही पाती थी। वहाँ पर गणेश जी बालक बनकर बैठे रहते थे। औरतें उस बालक से रोज सिर पर मटकी रखने के लिए कहती थी। गणेश ने सोचा की यह औरत रोज सिर पर मटकी रखने के लिए कहती है। पर रोटी खाने के लिए नही कहती। एक दिन गणेश भी उसके पीछे–पीछे चला गया।

औरत से बोला,''मैं आज आपके घर रोटी खाँऊगा।''

औरत भागी–भागी अपनी सास के पास पहुँची और बोली,''सासुजी, क्या आपने रोटी खा ली?''

सासुजी बोली,''नही खाई है। मतलब क्या है कहने का?''

बहू बोली,''अपने घर एक मेहमान आया है और वह रोटी खाने के लिए कह रहा है।''

सासूजी बोली,''चार रोटी है। हम तो भूखे रह जायेंगे, लेकिन उसे रोटी खिला दो।''

बहू ने दो रोटी थाली मे रख दी और उसे बुला लिया। वह दोनो रोटी को खा गया और बोला मेरे लिए और रोटी लाओ। बहू ने दो रोटी उसे और रख दी। लेकिन उन रोटियों से भी उसका पेट नही भरा।

वह बोला,''क्या और भी रोटी है?''

बहू बोली,''अब तो कुछ भी नहीं है। लेकिन एक मुठठी चने हैं।''

गणेशजी बोले,''कोई बता नहीं मुझे तो एक मुठठी चने ही खिलाओ।''

बहू ने उसे चने ही खिला दिये। गणेश जी ने एक मुठठी चने खाने के बाद उसके घर को सोने चाँदी से चमका दिया।

बहू जल्दी से अपनी सास के पास पहुँची और बोली,''सासूजी–सासूजी आओ तो सही। देखो अपने कोठे मे ऐसा क्या चमक रहा है? यह मेहमान नही है, यह तो गणेश जी महाराज है। इसने ही घर की हालत देखकर घर को चमका दिया है।''

सास और बहू घर को देखकर बहुत खुश हुई।

सीमा मीना, समूह–तिरंगा कक्षा–7

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

1. एक पैर का ऐसा आदमी, काली धोती पहने रहता।
2. आल चाली माला चाली कान के आंटो देर चाली।
3. सुबह सुबह बोलता हूँ सबको मैं जगाता हूँ।
4. मैं खा नही सकती पी सकती हूँ।
5. बाहर से पीला रहता हूँ अन्दर से सफेद रहता हूँ।

निकिता, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

हीहीही
ठीठीठी

1– आचार्य जी (बच्चों से) ''बताओ अगर कभी दिन में ही चांद–तारे नजर आने लगे तो क्या होगा?''

एक बच्चा, ''तब तो स्कूल नहीं जाना पड़ेगा।''

2– कल एक पत्नी ने अपने पति को यह कहकर चुप कर दिया कि ''ज्यादा हो. शियार मत बनो, जितना दिमाग तुम्हारे पास है, उतना तो मेरा हमेशा खराब रहता है।''

3– टिकिट चेकर – ''अम्मा जी, आपका टिकिट तो धीमी गाड़ी का है, आप तेज गाड़ी में कैसे बैठ गई।''

अम्मा– ''इसमें मेरी क्या गलती है, जाकर अपने ड्राइवर से कहो कि गाड़ी धीमी चलाए।''

सोनू सिर्रा, समूह–तिरंगा, उम्र–10 वर्ष

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

पिंटु प्रजापत, कक्षा–6, उदय पाठशाला, फरिया

एक बार एक लोमड़ी थी। वह बहुत चालाक थी। एक दिन वह शिकार की तलाश में घूम रही थी। तभी उसे खरगोश दिखाई दिया। उस खरगोश के पेर में चोट लगी थी इसलिए वह भाग नहीं पा रहा था। ...

धर्मसिह, अशोक, *समूह–तिरंगा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

वर्षा को अब जाना है।
सर्दी को अब आना है।

शिक्षक– **विमल प्रजापत** *द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

हाथी फल–फूल खाने लिए एक पेड़ के पास गया। तभी वहाँ एक चिड़िया आई। चिड़िया बोली, ''इस पेड़ पर मेरा घौंसला है। तुम मेरे घौंसले को गिराना मत, नहीं तो उसमें रखे मेरे सारे अण्डे नीचे गिरकर टूट जायेंगे।'' यह सुनकर हाथी ने जानकर उस पेड़ की डाली को हिलाया तो चिड़िया के अण्डे नीचे गिर गये। यह देखकर चिड़िया रोने लग गई। उसने सोचा हाथी इतना बड़ा जानवर है, फिर भी इसने मेरे अंडे गिरा दिए। अब मैं इसको कैसे सबक सिखाऊँ?...

विष्णु प्रजापत, कक्षा–4, उम्र–9 वर्ष, राज. प्राथ. विद्या. बोदल द्वारा शुरू की गई कहानी को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अल्लापुर के बच्चों ने पूरा करके मोरंगे को भेजा है।

रौनक,
कक्षा–3, उदय पाठशाला, जगनपुरा

...वह उसके एक दोस्त 'मच्छर' के पास गई। उसने दोस्त को सारी बात बता. ई। मच्छर उसके दोस्त 'चील' के पास गया और मच्छर ने चील को सारी बात बताई फिर चील भी उसके दोस्त मेंढ़क के पास गई और उसको सारी बात बताई। वे सभी मिलकर चिड़िया के पास गये और उन टूटे हुए अण्डों को देखकर बहुत दुःखी हुए। उन्होंने निःश्चय किया कि हाथी को सबक सिखाना चाहिए। एक दिन तालाब के किनारे वह हाथी पानी पीने के लिए आ रहा था। तभी उसके पास चिड़िया का दोस्त मच्छर आया तो उसने उसके कान में चिलना शुरू कर दिया। जिससे उसका ध्यान भटक गया। फिर चील आई और हाथी के आँखों में चोंच मार दी जिससे हाथी अंधा हो गया। फिर मेंढ़क ने गड्डे में जाकर चिल्लाना शुरू कर दिया। हाथी ने सोचा कि मेंढ़क चिल्ला रहा है तो पानी वहीं है। हाथी आवाज सुनकर उसी ओर आगे बड़ा तो वह गड्डे में गिर गया।

हेमन्त महावर, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. अल्लापुर

..एक दिन हाथी जंगल में पानी पीने गया तो हाथी ने देखा कि चिड़िया भी उसी तालाब में पानी पी रही है। चिड़िया ने जब हाथी को देखा तो वह एक पेड़ पर जाकर बैठ गई। हाथी जब वापस वहाँ से निकला तो हाथी ने चिड़िया से कहा कि, ''तुम मुझसे कितनी छोटी हो, तुम मुझसे कभी–भी बदला नहीं ले सकोगी।'' चिड़िया को बहुत गुस्सा आया। चिड़िया ने कहा, ''मैं तुमसे इसका बदला जरूर लेकर रहूंगी।'' एक दिन चिड़िया ने देखा कि हाथी पानी पीने के लिए आ रहा है तो वह पहले ही तालाब पर चली गई व साथ में और चिड़ियाओं को भी ले गई। वहाँ उन्होंने मिलकर तालाब का पानी गंदा कर दिया। हाथी जब पानी पीने लगा तो उसने देखा कि तालाब का सारा पानी गंदा है। हाथी ने सोचा कि यह पानी गंदा किसने किया होगा। तभी चिड़िया बहुत जोर से हंसी। चिड़िया ने कहा, ''तुमने उस दिन मेरे अण्डे पेड़ से नीचे गिरा दिये थे।'' हाथी को पहले ही बहुत प्यास लग रही थी। हाथी को बहुत गुस्सा आया और हाथी ने उसी दिन से सबक सीख लिया। उसने चिड़िया से माफी मांगी। हाथी ने कहा कि, ''चिड़िया बहना मैं ऐसा काम अब कभी नहीं करूंगा। तुम मेरी दोस्त बन जाओ।'' फिर हाथी और चिड़िया दोनों दोस्त बन गये। हाथी ने चिड़िया को अपनी पीठ पर बैठाकर जंगल में घुमाया।

निरमा मीणा, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. अल्लापुर

... चिड़िया ने हाथी से कहा कि, ''मैं अपनी दोस्त चींटियों को बुलाकर लाती हूँ।'' फिर चींटियाँ आई और उन्होंने हाथी से कहा कि, ''इस माँ के अण्डों को तुमने पेड़ से क्यों गिराया?'' हाथी बोला कि, ''अण्डे मुझे बहुत पसंद थे इसलिए मैंने उन्हें गिरा दिया।'' चिड़िया बोली कि, ''तुम्हे इसका पाप लगेगा। जब तुम्हारे बच्चे होंगे तो उन्हें भी कोई इसी तरह नुकसान पहुँचायेगा।'' यह कहकर चिड़िया वहाँ से चली गई।

संजना महावर, कक्षा–6, रा.उ.मा.वि. अल्लापुर

प्रीति,
कक्षा–5, उदय पाठशाला,
राजकीय प्रा. वि. रावँल

.....यह देखकर चिड़िया रोने लग गई। उसने सोचा हाथी इतना बड़ा जानवरी है, फिर भी इसने मेरे अण्डे गिरा दिये। अब मैं इसको कैसे सबक सिखाऊँ?

दूसरे दिन जब हाथी जंगल में सेर करने के लिए गया तो चिड़िया उसके पीछे–पीछे गई। जब हाथी जंगल में सेर करके वापस आ रहा था तो रास्ते में एक हथनी मिली। हाथी ने हथनी से पूछा कि, ''तुम इतने दिनों तक कहाँ थी?'' वे दोनों अच्छे दोस्त

अंकेश मीना, कक्षा–11, राजकीय प्रा. वि. छरोदा

थे। हथनी बोली कि, ''मैं कुछ दिनों से बीमार हूँ। मेरा एक बेटा था 'गोलू' वह एक जंगल में गया और उसका पैर सांप के बिल में घुस गया। उसे सांप ने डंस लिया। उस दिन से उसका कोई पता नहीं चल रहा है।'' हथनी यह बात हाथी से कह रही थी तो हथनी बहुत रोई। जब हाथी ने हथनी से पूछा कि, ''तुम क्यों रो रही हो तो हथनी बोली कि जब किसी माँ के बच्चों को कोई तकलीफ होती है या कोई दूसरा उसके बच्चों को नुकसान पहुँचाता है तो उससे ज्यादा दुःख बच्चों की माँ को होता है।'' यह बात सुनकर हाथी बहुत पछताने लगा। हथनी ने पूछा कि, ''तुम क्यों दुःखी हो रहे हो?'' हाथी बोला कि, ''मैंने एक चिड़िया के अण्डे जान बूझकर तोड़ दिये। पता नहीं उस चिड़िया पर क्या बीत रही होगी।'' हथनी बोली कि तुम अभी जाओ और उस चिड़िया से मांफी मांगो। हाथी चिड़िया के पास गया और उससे माफी मांगी। चिड़िया बोली, ''कोई बात नहीं मैंनें तुम्हारी सारी बात सुन ली थी। तुम्हें इस बात का पछतावा हुआ है।''

कुसुम सैनी, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. अल्लापुर

पहेलियों के ज़वाब –

1. छाता 2. ताला–चाबी 3. मुर्गा 4. तितली 5. केला

दीपेश, उम्र–6 वर्ष,
समूह–फुलवारी